International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

व्यंगकार हरिशंकर परसाई

डॉ.नागरगोजे ए.बी.

एच.पी.टी.आर.वाय.के.

महाविद्यालय, नाशिक—५.

प्रस्तावना:—

व्यंग्य विधा के शीर्षस्थ व्यंग्यकार के रूप में परसाई की शिनाख्त है। व्यंग्य और परमाई एक दूसरे के पर्याय बन चुके है। परसाई रचनावली प्रकाशित होने के बाद भी वे परंपरागत विद्या लेखन के चौखटों को निरंतर तोड़कर रचना कर रहे हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल का समाज तथा मनुष्य की व्यवहारगत विसंगति परसाई के साहित्य में प्राप्त होती है। इनका व्यंग्य सभी पाठकों को प्रभावित कर सोचने के लिए मजबूर कर देता है। व्यंग्य के द्वारा परसाई ने रूढ़ियाँ तथा अंधविश्वास पर जोरदार आक्रमण किया है। इनकी रचनाओं में हमारे रोजमर्रा जिंदगी के विषय मिलते है। अत: इनकी रचनाओं में ताजगी है। मानवीय मूल्यों के विकास के विषय इनकी ग्रंथ संपदा में होते है। अत: इनके ग्रंथों को उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनके ग्रंथों की सूची निम्नानुसार—

१. हसते हैं, रोते हैं
२. तब की बात और भी
३. भूत के पाँव पीछे
४. जैसे उनके दिन फिरे
५. बेईमानी की परत
६. सुनो भाई साधो

७. पगडंडियों का जमाना

८. सदाचार का तावीज

९. उल्टी सीधी

१०. और अंत में

११. निठल्ये की डायरी

१२. ठिठुरता हुआ गणतंत्र

१३. शिकायत मुझे भी है

१४. अपनी—अपनी बिमारी

१५. तिरछी रेखाएँ

१६. वैष्णव की फिसलन

१७. मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ

१८. एक लड़की पाँच दिवाने

१९. विकलांग श्रद्धा का दौर

२०. पाखंड का आध्यात्म

२१. दो नाक वाले लोग

२२. काग भगोड़ा

२३. प्रतिनिधी व्यंग्य

२४. तुलसीदास चंदन घिसे

२५. कहत कबीर

परसाई में इन व्यंग्य संकल्पनो में व्यंग्य विद्या को स्थापित कर कश्य और शैली की दृष्टि से सशक्त किया है। आजादी के पूर्व हिन्दुस्थान की स्थिति अगर देखनी है तो प्रेमचंद पढ़ना है, और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दुस्तान अगर देखना है तो परसाई पढ़िए। इनके समूचे

साहित्य के अध्ययन से ऐसा लगता है कि व्यंग्य उनके रग—रग में भरा हुआ है। व्यंग्य तो उनके शरीर की आत्मा ठहरी है। इसलिए तो मुक्तिबोध ने परसाई के संदर्भ में लिखा है कि—

परसाईं जी का सबसे बड़ा सामर्थ्य संवेदनात्मक रूप से यथार्थ का आकलन है। चाहे वह राजनैतिक प्रश्न हो या चरित्रगत। हमारे यहाँ की साहित्यिक संस्कृति ने सच्चाई के प्रकटीकरण पर जो हटबंदी करके रखी है उसे देखते हुए परसाईं जी की कला सहज ही वामपक्षी हो जाती है।

परसाई ने न केवल व्यंग्य को बल्कि हिन्दी साहित्य को भी एक नयी दृष्टि दी है, सामाजिक तौर पर सुसंपन्न किया है। यह उनके पाठक वर्ग की तादात से स्पष्ट होता हे। भारत देश की विसंगति पूर्ण राजनीति, सामाजिक, प्रशासनिक, धार्मिक विशेषताओं को परसाईं ने बदलने के लिए सबकुछ लिखा है। परसाईं ने गंभीरता से व्यंग्य लिखे है, फिर भी समीक्षक कहते है, मजा आ गया। इनके व्यंग्य से परसाईं ने स्वयं व्यंग्य क्यों? कैसे? किसलिए? को लेकर भूमिका में लिखा है कि—

अभी तक व्यंग्य की समीक्षा की भाषा ही नहीं बनी। मजा आ गया से लेकर बखिया उधेड दी तक कुछ फिकरे इस पर छिपाकर समीक्षा की इतनी समझ ली जाती है। हास्य, विनोद मखौल से व्यंग्य को अलग करके नहीं देखा जाता। परसाईं कहते हैं मेरी कोई रचना पढ़कर प्रबुद्ध व पाठक भी कह देता है—बड़ा मजा आ गया जब कि खिजाने के लिए मैंने वह चीज लिखी थी।

हरिशंकर परसाई ने साहित्यिक दलबंदी, सामाजिक विद्रुपताएँ संकुचित मन:प्रकृति, धार्मिक आतंकवाद, प्रशासनिक भ्रष्ट कारोबार, व्यक्ति पर दोष, आदि में व्याप्त प्रगति विरोधी मूल्यों की प्रकृतियों को अपना निशाना बनाया है। देश की अवस्था को लक्ष्य करते हुए पुलिस की नीति पर, दुराचार पर, सदक्षणाय के बजाय खल—रक्षणाय पर मार्मिक आघात करते हुए परसाई रामसिंह ट्रेनिंग में लिखते हैं कि—

पुलिस अफसरों को देखते मुझे वर्षों हो गया है। किसी ने मुझे क्यों बे बुढ़े के शिवाय कुछ और नहीं कहा। मुझे तो तभी शक हो गया था, जब तूने मुझे आदर से बाबा कहा था। फिर तूने दूध पीने से इनकार किया। ऐसा कोई अफसर नहीं करता। फिर तूने रूपये नहीं लिए। ऐसा भी कोई अफसर कहता है? अरे, हम तो डर के मारे चोरी की रिपोर्ट नहीं करते कि, पुलिस वाले आयेंगे तंग करेंगे और हरजाना वसूल करके सरकार में जमा करेंगे। और तू कहता है कि चोरी का पता लगाऊँगा। तू तो कोई उठा है। पर बेटा स्वांग पूरा नहीं रच पाये और पकड़े गये। अब सच्चे पुलिस अफसर आते है जो तुझे दस—पांच साल जेल में सड़ायेंगे।

यहाँ परसाई ने विकति से संत्रास को लेकर दृष्टि सचेतना से पुलिस प्रशासन की अतिशयता पर प्रहार किया है। आज उसी क्षेत्र में सच्चाई से काम करने वालों का जीना दूभर हो गया है। लक्ष्य के अनुरूप व्यंग्य के तीक्ष्ण उस्तरे से परसाई ने जगह—जगह पाखंड और व्यामोह की बखिया जुधोड़ दी है। परसाई के ज्ञान चक्षु में सूक्ष्म तथा दूरगामी देखने की क्षमता है अत: समाज में कौन—सी प्रवृत्ति बढ़ रही है, किसे ध्वस्त करना चाहिए कैसे जनता को सुधारना चाहिए और

कहाँ कौन—सी ताकद उभर रही है यह दृष्टिकोण हिन्दी के क्षेत्र में केवल उनके पास है।

परसाई में अनेक विशेषताएँ विद्यमान है अन्य साहित्यकारों में पाठकों से तादाम्य मिलना मुश्किल है। लेकिन परसाई में यह सर्वत्र दिखाई देता है। सुरेश कुमार वर्मा इस संदर्भ में लिखते है कि—

पहली बार कोई लेखक बड़े व्यापक स्तर पर पाठक वर्ग से जुड़ सका है। पहली बार कोई लेखक पाठकों को कनविन्स कर सका है कि वे कुटिल खलों, शोषकों के शिकार है, और पहली बार कोई लेखक पाठकों से तादाम्य स्थापित कर उनके धरातल पर चिंता और सोंच को धारण कर सका है। सभी स्तरों पर लेखक और पाठक की अनुभूतिक समानता और एकता परसाई लेखक की जबरदस्त विशेषता है।

पाठक और परसाई के बीच लेखकीय पूरी बहुत की है। अत: उनकी रचना में अपील से भ्रष्ट तथा अत्याचारी भी अपनी तस्वीर देखकर चुपचाप डर जाते हैं परसाई ने जो यथार्थ जीवन देखा उसी को भोगा उसे ही कहा और उसी को लिया। साहित्यजगत में कल्पना रम्यता को स्थान होता है, लेकिन परसाई के साहित्य में कल्पना ढूँढने से भी मिलना मुश्किल है। अत: आज के अनेक साहित्यकार उनसे शिक्षा ग्रहण करते हुए सृजन करते हुए, दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष:—

आज के हमारे सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन में श्रद्धा त्याग, ईमानदारी, पवित्रता, सत्य, अहिंसा आतिथ्य के संदर्भ में परसाई ने उपहासपूर्ण तथा बेढग जीवन का चरित्र एक मध्यमवर्गीय कुत्ता,

पवित्रता का दौर, सत्यसाधक मंडल, वैष्णव की फिसलन, विकलांग श्रृथा का दौर, ईमानदारों के सम्मेलन में आदि रचनाओं में मार्मिक प्रहार किया है। परसाई के व्यंग्य ने, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक धार्मिक शैक्षणिक सांस्कृतिक क्षेत्रों से सम्बन्धित मूल्यों की गिरावट को सहजता से प्रस्तुत किया है। प्रत्येक के जीवन में घोर दु:ख आता है परिवेशगत मजबूरियाँ रहती है उससे निराश न होकर व्यक्तिगत दु:ख से सामाजिक दु:ख परखने की शक्ति, संजीवनी अकेले परसाई में है। बचपन से ही उनका जीवन दु:खमय रहा कथनी और करनी की विसंताती को भोगा, इससे बाहर निकलने के लिए। इससे बाहर निकलने के लिए उन्होंने व्यंग्य का आधार लिया।

प्रस्तुत कर्ता

डॉ.नागरगोजे ए.बी.
एच.पी.टी.आर.वाय.के.
महाविद्यालय, नाशिक—५.